**पाठ - 9** **नवम्बर 25 - दिसम्बर 1**

# दोषी न ठहराया जाना

**सब्त अपराह्न** **नवम्बर 25**

**इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढें : रोमि० 8:1-17**

**याद वचन :** *"सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दंड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं"* (रोमियों 8:1)

रोमियों 7 के लिये रोमियों 8 पौलुस का जवाब है। रोमियों 7 में पौलुस निराशा, असफलता एवं निंदा के विषय बातें करता है। रोमियों 8 में निंदा (दंड की आज्ञा) खत्म हो गई है, इसका स्थान यीशु मसीह में स्वतंत्रता और विजय ने ले ली है।

पौलुस रोमियों 7 में कह रहा था कि यदि आप यीशु मसीह को स्वीकारने से इन्कार करते हैं, रोमियों 7 का दुखद अनुभव आपका होगा। आप पाप के गुलाम हो जायेंगे, जो करने को चुनते हैं कर नहीं सकते। रोमियों 8 में वह कहता है कि मसीह यीशु आप को पाप से मुक्ति प्रदान करते हैं और अच्छाई करने की स्वतंत्रता जिसे आप करना चाहते हैं पर शरीर करने नहीं देता।

पौलुस विश्लेषण करना जारी रखता है कि यह आजादी असीमित कीमत से खरीदी गई। परमेश्वर के पुत्र मसीह ने मानवता का रूप धारण किया। यही एकमात्र रास्ता था जिससे वह हमसे संबंध स्थापित कर सकता था, हमारा आदर्श नमूना हो सकता था, और हमारा एवजी हो सकता था जो हमारे खातिर मर गया। वह "पापमय शरीर की समानता" में आया (रोमि० 8:3) परिणाम स्वरूप व्यवस्था की धार्मिक मांगें हममें पूरी हो सकती हैं (रोमि० 8:4) दूसरे शब्दों में मसीह ने पाप पर विजय हासिल की - वैसे ही व्यवस्था की सकारात्मक मांगे पूरी करने हेतु उनके लिये संभव बनाया जो विश्वास करते हैं उद्धार के साधन के तौर पर नहीं वरन् इसके परिणाम स्वरूप। व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता उद्धार का साधन नहीं रहा और न कभी रहेगा। यह पौलुस और लूथर का संवाद था, और यह हमारे लिये भी होना चाहिए।

**रविवार** **नवम्बर 26**

**यीशु मसीह में**

"सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दंड की आज्ञा नहीं क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं" (रोमि० 8:1) "दंड की आज्ञा नहीं" का क्या तात्पर्य है? और ऐसा शुभ समाचार क्यों?

पौलुस के लेखों में "मसीह यीशु में" एक सामान्य वाक्यांश है। एक व्यक्ति का मसीह यीशु "में" का अर्थ है कि उसने मसीह को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार कर लिया है। वह व्यक्ति उस पर अव्यक्त रूप से भरोसा करता है और उसने मसीह का-सा जीवन जीने का निर्णय कर लिया है। परिणाम है मसीह के साथ व्यक्ति का नजदीकी मिलन। "मसीह जीवन एवं शारीरिक जीवन एक दूसरे के विपरीत हैं। यह अध्याय 7 के विस्तृत अनुभव के साथ भी विरोधाभास है, जहाँ पर पौलुस एक मनुष्य का वर्णन करता है जो शारीरिक तौर पर अपने समर्पण से पूर्व दोषी होने के अधीन रहता है, मतलब यह है कि वह पाप का दास/दासी है। व्यक्ति मृत्यु के दंड की आज्ञा के अधीन है (रोमि० 7:11,13,24) वह "पाप की व्यवस्था" का सेवन करता है (रोमि० 7:23,25) यह व्यक्ति भयंकर तकलीफदेह स्थिति में है (रोमि० 7:24)

परन्तु तब व्यक्ति यीशु पर समर्पित होता है, और परमेश्वर के साथ उसके खड़े होने में तात्कालिक बदलाव आता है। पूर्व में व्यवस्था तोड़ने वाले के तौर पर दंड की आज्ञा हुई, वही व्यक्ति अब परमेश्वर की दृष्टि में सिद्ध खड़ा होता है, ऐसा खड़ा होता है

मानो उसने पाप ही नहीं किया था, क्योंकि यीशु मसीह की धार्मिकता पूर्ण रूप से उस व्यक्ति को ढंक लेती है। दंड की आज्ञा नहीं है, इसलिए नहीं कि वह व्यक्ति बेकसूर है, पापरहित या अनंत जीवन का हकदार है परन्तु इस लिये कि यीशु का सिद्ध जीवन चरित्र व्यक्ति की ओर से खड़ा होता है; इस प्रकार दंड की आज्ञा नहीं है।

परन्तु शुभ समाचार वहीं खत्म नहीं हो जाता है।

पाप की दासता से मनुष्य को क्या आजाद करती है? (रोमि० 8:2)

"जीवन की आत्मा की व्यवस्था" का अर्थ यहाँ पर मानवता को बचानेकी मसीह को योजना है, यह "पाप और मृत्यु की व्यवस्था" के साथ विपरीतार्थ है, जो अध्याय 7 में व्यवस्था, जिसके द्वारा पाप आसन करता था - जिसका अंत मृत्यु थी। इसकी बजाय मसीह की व्यवस्था जीवन और आजादी को लाती है।

"प्रत्येक व्यक्ति जो स्वयं को परमेश्वर पर समर्पित होने से इन्कार करता है वह दूसरे शक्ति के नियंत्रण में है। वह स्वयं का नहीं है। वह आजादी की बात कर सकता है, परन्तु वह बहुत ही अधम दासता में है।

जब वह यह सोचता है कि वह अपने स्वयं के विचार के हुक्मों का अनुपालन कर रहा है असल में वह अंधकार को राजकुमार की इच्छा का आज्ञापालन करता है। मसीह आत्मा से पाप की दासता की बेड़ियों को तोड़ने के लिये आया।" *एलेन जी० ह्वाईट, द डिजायर ऑफ एजेस, पेज 466* ।

क्या आप दास हैं, अथवा मसीह में आजाद हैं? निश्चितता के लिये कैसे समझ सकते हैं?

**सोमवार** **नवम्बर 27**

**व्यवस्था जिसे नहीं कर सकी**

व्यवस्था कितनी ही भली हो (विधि व्यवस्था, नैतिक व्यवस्था या दोनों) हमें जिसकी बहुत जरूरत है हमारे लिये नहीं कर सकती, और वह है उद्धार के साधन की व्यवस्था करना, एक साधन दंड और मृत्यु की आज्ञा से हमें बचाने के लिये जो पाप लेकर आता है। इस निमित्त, हमें यीशु की जरूरत है।

पढ़ें : रोमियों 8:3,4 मसीह ने क्या किया जो व्यवस्था अपने स्वभाव से नहीं कर सकती है?

परमेश्वर ने "अपने निज पुत्र को पापी शरीर की समानता में भेजकर" उपचार की व्यवस्था की, और उसने "पाप को शरीर में दोषारोपित किया।" उद्धार की योजना में मसीह का अवतार एक महत्त्वपूर्ण कदम था। क्रूस की प्रशंसा करना उचित है, परन्तु उद्धार की योजना के कार्यान्वयन में, मसीह का जीवन "पापी शरीर की समानता बहुत ही महत्त्वपूर्ण था ।

जिसके फलस्वरूप परमेश्वर ने मसीह को भेजने में किया है, अब हमारे लिये व्यवस्था की धार्मिक मांग को पूरी करना संभव है; वह है व्यवस्था की अपेक्षानुसार सही चीजों को करना। "व्यवस्था के अधीन" (रोमि० 6:14),
यह असंभव था; "मसीह में" अब यह असंभव है।

तथापि, हमें अवश्य याद रखना चाहिए कि व्यवस्था की मांग के अनुरूप करने का यह कदापि अर्थ नहीं कि व्यवस्था को भली रीति से मानने का मतलब उद्धार को अर्जित करना। वह विकल्प नहीं है - कभी नहीं था। इसका अर्थ है साधारण जीवन जीना जो मसीह हमें जीने में बल देता है; इसका अर्थ है आज्ञाकारिता का जीवन एक जिसमें हमने "शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है" (गला० 5:24),एक जीवन जिसमें हम मसीह के चरित्र को प्रतिबिंबित करते हैं।

रोमियों 8:4 में "चलना" एक मुहावरेदार अभिव्यक्ति, "आचरण करना" को सूचित करता है । शरीर शब्द यहाँ पर जिद्दी व्यक्ति को अपराध सिद्ध होने से पहले या बाद में संकेत करता है। शरीर के पीछे चलने का मतलब है स्वार्थी अभिलाषाओं द्वारा नियंत्रित होना ।

इसके विपरीत आत्मा के पीछे चलना व्यवस्था की धार्मिक अपेक्षाओं को पूरी करना है। इन अपेक्षाओं को हम केवल पवित्र आत्मा की मदद ही से पूरी कर सकते हैं। व्यवस्था की अपेक्षानुसार केवल यीशु मसीह में आजादी से ही की जा सकती है। मसीह से हटकर, ऐसी कोई आजादी नहीं है। वह जो पाप का दास है उसके लिये अच्छाई करना चुनना असंभव है। (देखें रोमि० 7:15,18)

कितनी बेहतरी से आप व्यवस्था का पालन कर रहे हैं? व्यवस्था के द्वारा उद्धार अर्जित करने की किसी धारणा को बगल में रखते हुए, क्या आपका जीवन एक है जिसमें "व्यवस्था की धार्मिकता" पूरी होती है? यदि नहीं, तो क्यों नहीं? आपके व्यवहार को तर्कसंगत बनाने के लिये आप किस प्रकार के झूठे बहाने प्रयुक्त कर रहे हैं?

**मंगलवार** **नवम्बर 28**

**शरीर या आत्मा**

"क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं, परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है" (रोमि. 8:5,6) इन पदों पर चिंतन करें। उनसे कौन-सा मूल संदेश आता है? आपके जीवन जीने के तरीके के विषय वे आपको क्या कहते हैं?

"के ऊपर" का मतलब यहाँ पर "के अनुसार"। "मन" का अर्थ यहाँ पर मन की अभिलाषा से है। एक दल के लोग अपने मनों को स्वभाविक अभिलाषाओं को पूरी करने के लिये ललकारते हैं, दूसरे अपने मनों को आत्मा की चीजों के लिये ललकारते हैं, ताकि उसके हुक्म का पीछा किया जा सके। क्योंकि मन कार्यों को तय करता है, दो दल अलग-अलग ढंग से जीते और कार्य करते हैं।

शारीरिक मन क्या करने में असमर्थ है? रोमि० 8:7,8

शरीर की अभिलाषाओं की पूर्ति में मन लगाना वास्तव में परमेश्वर के विरुद्ध शत्रुता की स्थिति में रहना है। वह जिसका मन इस प्रकार तय हो गया है परमेश्वर की इच्छा को करने के विषय में बेफिक्र हो जाता है। उसकी व्यवस्था की खुले तौर पर अवहेलना करने के द्वारा वह उसके विरुद्ध विद्रोह भी कर डालता है।

पौलुस विशेष रूप से जोर-देने की इच्छा करता है कि यदि आप मसीह से अलग हैं तो, परमेश्वर की व्यवस्था को मानना असंभव है। बार-बार पौलुस इस विषय पर वापसी करता है: कोई कितनी भी कोशिश कर ले मसीह से अलग व्यवस्था को मान नहीं सकता।

पौलुस का विशेष उद्देश्य था यहूदियों को मनाना कि उन्हें उनके "तोराह" (व्यवस्था) से अधिक आवश्यक थी। उन्होंने अपने आचरण के द्वारा दिखा दिया था कि ईश्वरीय प्रकाशन के बावजूद भी, वे भी अन्यजातियों की तरह उसी पाप के दोषी थे (रोमियों 2) इन सबका पाठ यह था कि उन्हें मुक्तिदाता की जरूरत थी। उसके बिना वे पाप के दास होते, इसके प्रभुत्व से बच नहीं सकते ।

यह उन यहूदियों को पौलुस का जवाब था जो समझ नहीं सकते थे क्यों जो परमेश्वर ने उन्हें नये नियम में दिया था। उद्धार के लिये काफी नहीं था। पौलुस ने स्वीकार किया कि जो वे करते आ रहे थे सब ठीक था, परन्तु यह कि उन्हें मुक्तिदाता को स्वीकार करने की भी जरूरत थी जो अब आ गया था।

अपने विगत 24 घंटे का अवलोकन करें। क्या आपके काम आत्मा के या शरीर के थे? आपके स्वयं के विषय में आपका जवाब आपको क्या कहता है? यदि शरीर का, आपको कौन से बदलाव लाने चाहिए और आप उन्हें कैसे ला सकते हैं?

**बुधवार** **नवम्बर 29**

**मसीह आप में**

पौलुस दो संभावनाओं पर फर्क करते हुए अपने विषय को जारी रखता है कि लोग सामना करते हैं जैसे वे जीवन जीते हैं या तो आत्मा के अनुसार - जो परमेश्वर की पवित्र आत्मा है, जो हमें प्रतिज्ञा की गई है - या उनके पापी और शारीरिक स्वभाव। एक अनंत जीवन को और दूसरा अनंत मृत्यु की अगुवाई करता है। यहाँ पर कोई मध्य भूमि नहीं है। अथवा जैसा मसीह ने स्वयं कहा: "जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता है" (मत्ती 12:30) यह उसकी अपेक्षा सरल या अधिक सादगी होना कठिन है।

पढ़ें : रोमियों 8:9-14। उन्हें क्या प्रतिज्ञा की गई है जो स्वयं को पूरी रीति से मसीह में समर्पित करते हैं?

शरीर में जीवन आत्मा में जीवन के साथ फर्क किया जाता है। आत्मा में जीवन परमेश्वर की आत्मा, पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित होता है। वह इस अध्याय में मसीह की आत्मा कहा गया है, संभवत: इस अर्थ में कि वह मसीह का प्रतिनिधि है, और उसके द्वारा मसीह विश्वासियों में वास करता है (रोमि० 8:9,10)

इन पदों में, पौलुस उस संदर्भ पर वापसी करता है जिसका उसने रोमियों, 6:1-11 में प्रयोग किया।

बपतिस्मे में आलंकारिक रूप से "पाप का शरीर" - वह शरीर जिसने पाप का सेवन किया - नाश हो जाता है। "पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया" (रोमि० 6:6) परन्तु जैसा कि बपतिस्मे में गाड़ा जाना ही नहीं है पर पुनरुत्थान भी है, अत: व्यक्ति बपतिस्मे लेकर जीवन की नवीनता में चलने को उठ खड़ा होता है। इसका अर्थ है पुराने व्यक्तित्व को मृत्यु में डाल देना, एक चुनाव जिसे हमें दिन प्रतिदिन, प्रतिक्षण स्वयं करना है। परमेश्वर मनुष्य की आजादी को नाश नहीं करता है। पुराना मनुष्यत्व जो पाप का है नाश होने के बाद भी, अभी भी पाप करना संभव है। कुलुसियों को पौलुस ने लिखा, "इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो जो पृथ्वी पर हैं" (कुल० 3:5)।

इस प्रकार हृदय परिवर्तन के बाद भी पाप के विरुद्ध संघर्ष हो सकता है। फर्क यह है कि व्यक्ति जिसमें आत्मा वास करती है। अब जीत के लिये उसके पास ईश्वरीय शक्ति है। इसके अतिरिक्त वह व्यक्ति पाप के दास के मालिक से आश्चर्य जनक ढंग से स्वतंत्र हुआ है, वह एहसानमंद है कि फिर कभी पाप का सेवन नहीं करेगा।

इस विचार पर चिंतन करें कि परमेश्वर की आत्मा, जिसने यीशु को मृत्यु से जिलाया, वही है जो हम में वास करती है यदि हम उसे अनुमति देते हैं। उस सामर्थ्य के विषय सोचें जो हमारे लिये है। कौन-सी चीज हमें इसके लिये स्वयं को उपलब्ध कराता है जो कि हमें ऐसा करना चाहिए?

**बृहस्पतिवार** **नवम्बर 30**

**अंगीकार की आत्मा**

मसीह में नये संबंध को पौलुस किस प्रकार वर्णन करता है? रोमि० 8:15। इस प्रतिज्ञा में हमारे लिये कौन-सी आशा पायी जाती है? इसे हम अपने जीवनों में कैसे साकार कर सकते हैं?

नया संबंध डर से आजादी के तौर पर वर्णन किया जाता है। दास बंधुवाई में है। वह अपने मालिक के निरंतर डर की स्थिति में रहता है। वह अपने दीर्घकालीन स्थिति में रहता है। वह अपने दीर्घकालीन सेवा के लिये कुछ प्राप्त नहीं करने हेतु खड़ा होता है।

यीशु को ग्रहण करने वालों के साथ ऐसा नहीं होता। पहला, वह स्वैच्छिक सेवा प्रदान करता है। दूसरा, वह बिना डर के सेवा करता है, क्योंकि, "सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है" (1 यूहन्ना 4:18)। तीसरा, एक बच्चे की नाई गोद लिया गया, वह अनंत कीमत के उत्तराधिकार का मालिक होता है।

"दासता की आत्मा विधिक धर्म के अनुसार जीने की चाह के द्वारा, व्यवस्था में हमारे स्वयं के सामर्थ्य के दावों को पूरा करने के संघर्ष के द्वारा उत्पन्न हुआ है। हमारे लिये आशा है जब हम अब्राहम की वाचा के अधीन आते हैं। जो यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा अनुग्रह की वाचा है।" - *एलेन जी० ह्वाईट कॉमेंट्स द एस०डी०ए० बाइबल कॉमेंट्री, वॉल्यूम 6, पेज 1077 ।* हमें आश्वासन क्या देता है कि परमेश्वर ने हमें वाकई बच्चे के तौर पर ग्रहण कर लिया है? रोमि० 8:16 ।

आत्मा की आंतरिक गवाही हमारी स्वीकरण की पुष्टि करती है। जब केवल अनुभव के द्वारा जाना सुरक्षित नहीं है, जिन्होंने अपनी बेहतरीन समझ के अनुसार वचन की ज्योति का अनुसरण किया है आंतरिक प्रमाणिकृत आवाज को सुनेंगे जो उन्हें आश्वस्त करता है कि वे परमेश्वर की संतान के तौर पर स्वीकार कर लिये गये हैं।

सचमुच, रोमियों 8:17 हमें बतलाता है कि हम उत्तराधिकारी हैं; यह कि हम परमेश्वर के परिवार के अंश है, और उत्तराधिकारी के तौर पर, संतान के तौर पर, हम हमारे पिता से अद्‌भुत उत्तराधिकार को प्राप्त करते हैं। हम इसे अर्जित नहीं करते; यह मसीह में हमारी नई हैसियत के गुण द्वारा हमें दिया जाता है, एक हैसियत उसके अनुग्रह के द्वारा हमें प्रदान की जाती है, जो हमारे लिये उपलब्ध कराया गया है क्योंकि यीशु की मृत्यु हमारे खातिर हुई।

आप परमेश्वर के कितने नजदीक हैं? क्या वाकई आप उसे जानते हैं,
या उसके बारे में जानते हैं? आपका सृष्टिकर्त्ता और मुक्तिदाता के साथ नजदीकी संबंध के लिये आपको कौन-से बदलाव आपके जीवन में लाने चाहिए? आपको क्या रोकता है और क्यों?

**शुक्रवार** **दिसम्बर 1**

**अतिरिक्त विचार :** "उद्धार की योजना विश्वासियों को क्लेश और परीक्षा से मुक्त जीवन प्रदान नहीं करता जो राज्य का एक भाग है। इसके विपरीत,
यह उन्हें मसीह का अनुसरण करने के लिये उसी स्व-इंकार और उलाहना के साथ आमंत्रित करता है .... यह ऐसे परीक्षा और उत्पीड़न के द्वारा है कि मसीह का चरित्र उसके लोगों में पुन: उत्पन्न होता और प्रकट होता है ... मसीह के क्लेशों में सहभागी होकर हम शिक्षित और अनुशासित होते हैं और भविष्य की महिमाओं को साझा करने के लिये तैयार होते हैं।" - *द एस०डी०ए० बाइबल कामेंट्री, बॉल्यूम 6, पेज 568, 569*

"परमेश्वर के सिंहासन से जंजीर जो नीचे की गई है निम्नतम गहराई को छूने के लिये काफी लम्बी है। मसीह दुर्दशा के गड्ढे के बाहर सबसे बड़े पापी को भी उठा

सकता है, और उन्हें रखने के लिये जहाँ वे परमेश्वर की संतान के तौर पर स्वीकार किये जाएंगे, अनंत उत्तराधिकार के लिये मसीह के साथ मालिकी होंगे"- *ऐलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 7, पेज 229 ।*

एक पूरे स्वर्ग में सम्मानित हुआ, मानव स्वभाव में खड़े होने के लिये इस संसार में आया, मानवता के शिखर पर पतित दूतों को परखने के लिये और पापी संसार के वासियों को ईश्वरीय सहायता के द्वारा जो व्यवस्थित की गई है, हर कोई परमेश्वर की आज्ञा पर आज्ञापालन के पथ पर चल सकता है।

हमारी फिरौती का मूल्य, हमारे उद्धारकर्त्ता के द्वारा चुकाया गया है। किसी को शैतान के द्वारा दास बनाये जाने की जरूरत नहीं है। मसीह हमारा सर्वशक्तिमान सहायक के तौर पर हमारे सामने खड़ा होता है।" *-एलेन जी० ह्वाईट, सेलेक्टेड मेसेजेस, बुक 1, पेज 309 ।*

**विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :**

- शुक्रवार के अध्ययन में से एलेन जी० ह्वाईट के उदाहरणों को पुन: पढ़ें। हमारे लिये उनसे हम कौन-सी आशा ले सकते हैं? अधिक महत्त्वपूर्ण, हमारे जीवन में जीत की इन प्रतिज्ञाओं को हम कैसे वास्तविक बना सकते हैं? मसीह में इतनी अधिक हमें प्रदान करने के साथ, हम क्यों दूर होते जाते हैं जो हम वास्तव में हो सकते थे।
- प्रायोगिक दैनिक रास्ते क्या हैं जो आप प्राप्त कर सकते हैं अपने मन को "आत्मा की चीजों पर लगाते हैं" (रोमि० 8:5) उसका क्या अर्थ है? आत्मा क्या चाह रखती है? आप किसके विषय में देखते, पढ़ते, या सोचते हैं जो इसे आपके जीवन में हासिल करना कठिन बना देता है?
- इस विचार पर चिंतन करें कि हम महान संघर्ष में, बिना बीच वाली जमीन के, या तो एक तरफ है या दूसरी तरफ उस स्पष्ट, तटस्थ सत्य के क्या निहितार्थ हैं? इस महत्त्वपूर्ण सत्य की अनुभूति रास्तों को कैसे प्रभावित करने चाहिए, जिसमें हम रहते हैं और चुनाव करते है, इतना तक कि छोटी चीजों में ?